वाशिंगटन डी. सी.
अगस्त २६, १९९९

सन्देश संख्या १३
क्रियायोग : आभ्यन्तर अस्तित्व का विज्ञान

आध्यात्मिक एवं धार्मिक मण्डी की सम्मोहक शक्तियों के लिए उपयोगी होना और अपने को बहुत विशिष्ट तथा धार्मिक मान लेना एक प्रकार की भीड़ व अराजकता में जीना है। क्रियायोग हमें एक सामंजस्य एवं समन्वयपूर्ण जीवन के लिए आमंत्रित करता है अर्थात् मन की बहिर्मुखी गतिविधियों की गलाघोंटू पकड़ से मुक्त करता है। एक प्रकार के स्फटिकीकरण तथा अन्तर्मुखीकरण की आवश्यकता है। जब तक अन्तर्मुखी यात्रा आरम्भ नहीं होती है, जो कुछ भी हम करते हैं वह पूर्ण रूप से व्यर्थ है। यह हमारे जीवन तथा समय का अपचय है। केवल अन्तर्मुखी यात्रा का व्यक्ति ही आनन्दमय हो सकता है।

हमारे जीवन में कथाओं, विश्वासों, कल्पनाओं, भ्रान्तियों एवं झूठों की आवश्यकता क्यों है? क्यों हमारे तथाकथित सत्य कुछ भी नहीं बल्कि सुन्दर झूठ, बड़ी–बड़ी बातों से युक्त सूक्तियाँ तथा क्षुद्र मन की पावन अवधारणायें मात्र हैं?

क्रियायोग प्रयोगात्मक एवम् अस्तित्वपरक है। इसमें किसी प्रकार के विश्वास की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है उस साहस की जिसके द्वारा वह अनभूति प्राप्त हो सकती है जो कि विश्वास द्वारा प्रक्षेपित एवं प्रोत्साहित नहीं है। आवश्यकता है उस रूपान्तरण की जो मन द्वारा छलयोजित नहीं है।

क्रियायोग आभ्यन्तर अस्तित्व का विज्ञान है। इस विज्ञान को समझना एवम् अभ्यास करना है। केवल तभी पीड़ा, यंत्रणा एवम् उत्तेजना से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। यह आवश्यक नहीं है कि योगियों को काल्पनिक उपाधियों (परमहंस, अवतार, यह आनन्द या वह आनन्द, यह गिरि या वह गिरि) से विभूषित किया जाय और उनके माध्यम से अपनी स्वार्थपरक लालसाओं को पूरा होने की अपेक्षा की जाय। एक योगी ''निर्मनावस्था'' के शुद्ध समझदारी की ऊर्जा का वैज्ञानिक होता है। क्या आप मैक्सप्लान्क को परमहंस मैक्सप्लान्क कह सकते हैं अथवा आइन्स्टीन को अवतार आइन्स्टीन? लाहिड़ी महाशय को मात्र लाहिड़ी महाशय ही रहने दें क्योंकि वह सम्भवतः प्रत्यक्ष बोध की अन्तर्मुखी क्रिया के महानतम वैज्ञानिक थे।

जय लाहिड़ी महाशय।